हड़प्पा सभ्यता, जिसे सिंधु घाटी सभ्यता के रूप में भी जाना जाता है, दुनिया की सबसे प्रारंभिक शहरी सभ्यताओं में से एक थी, जो कांस्य युग के दौरान अब आधुनिक पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिम भारत में पनप रही थी। हड़प्पा सभ्यता के बारे में मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

1. कालक्रम**:**

- हड़प्पा सभ्यता का विकास आमतौर पर लगभग 3300 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व तक माना जाता है, हालांकि सटीक डेटिंग के बारे में कुछ बहस है।

2. भौगोलिक विस्तार**:**

- सभ्यता में एक विशाल क्षेत्र शामिल था, जिसमें वर्तमान पाकिस्तान, भारत और अफगानिस्तान के कुछ हिस्से शामिल थे।
- प्रमुख शहरी केंद्रों में हड़प्पा, मोहनजो-दारो, लोथल, कालीबंगन और धोलावीरा शामिल हैं।

3. शहरी केंद्र**:**

- हड़प्पा के शहरों की विशेषता उन्नत शहरी योजना और वास्तुकला थी।
- उनके पास सुव्यवस्थित सड़कें, जल निकासी प्रणालियाँ, सार्वजनिक स्नानघर और बहुमंजिला इमारतें थीं।
- शहरों को ग्रिड पैटर्न में बसाया गया था।

4. लेखन प्रणाली**:**

- हड़प्पावासी एक ऐसी लिपि का प्रयोग करते थे जो अब तक पढ़ी नहीं जा सकी, जिसे सिन्धु लिपि के नाम से जाना जाता है।
- इस लिपि के शिलालेख विभिन्न कलाकृतियों पर पाए गए हैं, जो संचार की एक विकसित प्रणाली का सुझाव देते हैं।

5. अर्थव्यवस्था**:**

- अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित थी, हड़प्पावासी गेहूं, जौ, चावल और कपास की खेती करते थे।
- वे मेसोपोटामिया तक के क्षेत्रों के साथ व्यापार में लगे हुए थे, जैसा कि प्राचीन सुमेर में हड़प्पा कलाकृतियों की पुरातात्विक खोजों से पता चलता है।

6. धर्म और कला**:**

- हड़प्पावासी एक ऐसे धर्म का पालन करते थे जिसे अच्छी तरह से समझा नहीं गया है, हालाँकि कुछ प्रतीक और कलाकृतियाँ देवताओं और पवित्र जानवरों की पूजा का सुझाव देती हैं।
- टेराकोटा की मूर्तियाँ, मुहरें और मिट्टी के बर्तन जैसी कलाकृतियाँ सभ्यता के कलात्मक कौशल को प्रकट करती हैं।

7. अस्वीकार**:**

- हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारण आज भी इतिहासकारों के बीच बहस का विषय हैं।
- संभावित कारकों में पारिस्थितिक परिवर्तन शामिल हैं, जैसे सिंधु नदी के मार्ग में बदलाव, प्राकृतिक आपदाएँ और सामाजिक या राजनीतिक उथल-पुथल।

8. विरासत**:**

- हड़प्पा सभ्यता अपने पीछे एक समृद्ध पुरातात्विक विरासत छोड़ गई, जिसमें इसके सुनियोजित शहर, उन्नत जल निकासी प्रणालियाँ और कलात्मक कलाकृतियाँ शामिल हैं।
- इसे प्राचीन भारतीय सभ्यता के पालने में से एक माना जाता है और इसका भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान पर स्थायी प्रभाव पड़ा है।

9. पुनः खोज**:**

- हड़प्पा सभ्यता को 19वीं शताब्दी में फिर से खोजा गया जब पुरातत्वविदों और विद्वानों ने हड़प्पा और मोहनजो-दारो जैसे स्थलों पर खुदाई शुरू की।
- लिपि की व्याख्या और सभ्यता की गहरी समझ निरंतर अनुसंधान चुनौतियाँ हैं।

LEARNING MANTRAS